

ISSN 2456-8384

اگست ۲۰۱۷ء

ماہنامہ

شعاع عمل لکھنؤ



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳

ISSN 2456-8384

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/-

August 2017

Per Copy- Rs.25/-

شुआ-ع-امال

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



عماد العلماء فقیہ اہلبیت آیتہ اللہ العظمیٰ سید مصطفیٰ ”میر آغا“ صاحب علیین مآب
ولادت ربیع الاول ۱۲۵۲ھ مطابق ۱۸۳۷ء وفات پنجشنبہ ۱۱/رمضان ۱۳۲۳ھ

SHUA-E-AMAL

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufraan Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-
Annual 200/-

बिस्मिल्ली तशाला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अगस्त— 2017 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिलत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब

माननीय नवाब रजा साहब, भोपाल

माननीय सै० अहमद अब्बास नकवी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफा हुसैन नकवी ‘असीफ’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तजहीब’ नगरौरी

आसिफ अब्बास नौगांवी

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- शायरे अहलैबैत रजा सिरसिबी, सिरसी
- सै० सैफ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निजामी प्रेस विकटोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी

अगस्त - 2017

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ हैदर अब्बास नकवी, इलाहाबाद
- ⇒ अमील शम्सी, लखनऊ
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ महदी रज़ा
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ⇒ डॉ० आरिफ़ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

अगस्त 2017 ई०
ज़ीक़ादा 1438 हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-6) आयतुल्लाहिल उज़मा सै० अली नक़ी नक़वी	5
2.	हज क्या है? मौलाना सै० मुहम्मद शाकिर नक़वी साहब अमरोहवी	15
3.	मुख्य समाचार इदारा	17

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नक़ीब लखनऊ

और नूरे हidayat फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उज्जमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नक्वी ताबा सराह

यह बड़ा दूर रस वाक्या है। अगर अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} अपनी मातहत में मुआविया ऐसे शरख की हुकूमत कोदीनी फरीजे के मातहत बरदाश्त नहीं कर सकते थे तो उसके बाद कभी हुसैन^{अ०स०} बैअत करके मुआविया से बढ़कर यजीद ऐसे शरख की हुकूमत क्योंकर तस्लीम कर सकते हैं।?

फिर भी हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने मुआविया के नाम जो ख़त लिखा उसमें कोई सख़्ती व दुरुश्ती, लबो लहजे की तल्खी और जंगजूयाना अन्दाज़ न था बल्कि एक बरसरे इक्तेदार आने वाले हाकिमे आला को अपने किसी आमिल को जिस तरह का ख़त लिखना चाहिये वैसा ही था। इस ख़त में मज़मून जो मशहूर मुअर्रिख़ वाक़दी की किताब अल-जमल से मन्कूल है हस्बे ज़ैल है।

“तुमको मालूम होगा कि मैंने मुसलमानों के मुआमलात में अपने दामन को किस तरह साफ़ रखा और किस तरह तख़्त ख़िलाफ़त से बे ऐतेनाई (दूरी) इख़्तियार करता रहा। यहाँ तक कि वह हुआ जो टल न सकता था (क़त्ले उसमान) और उसके बाद मेरे लिये चार-ए-कार बाकी न रहा। यह वाक़यात बहुत तूलानी हैं। बहरहाल जो होना था वह हुआ और अब जो हालात पेश हैं वह आँखों के सामने हैं। अब तुम वहाँ के लोगों से बैअत हासिल करो और अपने यहाँ के आदमियों के एक वफ़द के साथ मेरे पास हाज़िर हो।”¹ मुआविया अगर मुख़ालिफ़त पर पहले ही से

तुले हुए न होते तो इस ख़त के मज़मून पर उन्हें अमल करना चाहिये था मगर वहाँ तो ऐनाद (दुश्मनी) व मुख़ालिफ़त की चिंगारियाँ पहले से सुलग रही थीं। आख़िर आपके मुक़ाबले में क़त्ले उसमान का ग़लत इल्ज़ाम तराशा गया और इस बहाने से आपकी मुख़ालिफ़त का झंडा ऊँचा किया गया।

मुआविया ने शाम वालों को हज़रत अली इब्ने अबी तालिब^{अ०स०} के ख़िलाफ़ इस ग़लत तोहमत को उनके ज़ेहन नशीन करके पूरे तौर पर मुशतइल कर दिया। मस्जिदे जामा दमिश्क में मातमी जल्से किये गए। मक़तूल ख़लीफ़ा का खून भरा कुर्ता मिम्बर पर डाल दिया गया और आलम यह था कि पचास साठ हज़ार का मजमा उसे देख देख कर नाला व ज़ारी करता और इस जोशे रिक्कत में उनसे कहा जाता था कि अब तुम्हें अली^{अ०स०} से इस खून का बदला लेना है।² अब हज़रत अली^{अ०स०} शाम की मुहिम के तदारुक का सामान करना चाह रहे थे जो यक बयक यह ख़बर आई कि तलहा और जुबैर ने जौज-ए-रसूल आइशा बिनते अबी बकर को आमादा करके आपके ख़िलाफ़ महाज़ तय्यार कर लिया है।³

वह लोग जो पच्चीस बरस तक हज़रत अली^{अ०स०} को मैदाने जंग से बिलकुल अलाहेदा रहते हुए ख़ामोशी की ज़िन्दगी गुज़ारते देख चुके थे उन्हें यकीन होगा कि हज़रत अली^{अ०स०} किसी न किसी तरह इस क़ज़िये (झगड़े) को रफ़ा

¹नहजुल बलागा जि/2, पेज/140

²तबरी जि/5, पेज/163 ³ तबरी जि/5, पेज/164

दफ़ा कर देंगे। और जंग की नौबत न आने देंगे मगर उन्होंने देख लिया कि वही अली जो अपनी तलवार को इतने अरसे तक नियाम में रख चुके थे कि जवानी गुज़र के बुढ़ापा आ गया था। आज वह ज़िम्मेदारी अपने ऊपर आयद हो जाने के बाद आईन व उसूल और हक़ की हिफ़ाज़त के लिये जंग पर बिल्कुल तय्यार हैं। बेशक़ इमाम हुसैन^{अ०स०} ने देखा कि उनके पिदरे बुजुर्गवार ने इस उसूल की सख़्ती के साथ पाबन्दी फ़रमाई कि जब तक फ़रीके मुख़ालिफ़ अमलन जंग की इब्तेदा न कर दे, उस वक़्त तक तलवार नियाम से न निकाली जाये। चुनानचे जमल⁴ के मैदान में यही हुआ कि जब सुफूफ़े लश्कर (लश्कर की सफ़े) मुरत्तब हो चुकीं तो हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने एक कुरआन हाथ में लेकर अपने साथियों से फ़रमाया कि कौन है जो इस कुरआन को ले जा कर उन्हें इस पर अमल करने की दावत दे मगर यह बताए देता हूँ कि वह क़त्ल कर दिया जायेगा। यह सुनकर अहले कूफ़ा में से एक जवान जिसका नाम मुस्लिम था खड़ा हो गया। कहा मैं जाऊँगा। हज़रत ने सुकूत फ़रमाया और फिर बलन्द आवाज़ से कहा कौन है जो इस कुरआन को ले जाकर उन्हें इस पर अमल की दावत दे मगर वह क़त्ल हो जायेगा। फिर खड़ा हुआ तो वही जवान। हज़रत ने फिर सुकूत किया और फिर वही अलफ़ाज़ बलन्द आवाज़ से कहे। जब फिर वही जवान खड़ा हुआ तो आपने वह कुरआन उसके सिपुर्द किया वह उसे लेकर सुफूफ़े मुख़ालिफ़ के सामने गया। ज़ालिमों ने उसका दाहना हाथ क़ता कर

⁴जमल अरबी में ऊँट को कहते हैं चूँकि इस जंग में जौज-ए रसूल आइशा को एक ऊँट पर महमिल में सवार करके हज़रत के मुक़ाबिल पर लाया गया था इसलिये इस का नाम जमल हुआ)

दिया तो उसने कुरआन को दोनों कटे हुए बाजूओं से थाम कर सीने से लगा लिया। इस हालत में कि खून की उसके कपड़ों पर बारिश हो रही थी। उसके बाद वह क़त्ल कर दिया गया। अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} पुकारे कि अब इन से जंग हलाल हो गई।⁵ अब दुनिया ने देखा कि वही तलवार जो बद्र, ओहद, ख़न्दक और ख़ैबर में किसी वक़्त चमक चुकी थी जमल के मैदान में चमकने लगती है। वही हाथ है और हाथ की सफ़ाई। वही दिल है और दिल की ताक़त। यहाँ तक कि जमल का मारिका फ़रीके मुख़ालिफ़ की शिकस्त पर ख़त्म हुआ उस वक़्त हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने फ़रीके मुख़ालिफ़ की सरगिरोह उम्मुल मोमेनीन आइशा के साथ वह शरीफ़ाना और बा-इज़ज़त बर्ताव किया जैसा कि किसी फ़ातेह ने अपने मफ़तूह (हारा हुआ) फ़रीक़ के साथ नहीं किया होगा।⁶ यह मारिका रोज़े पंजशम्बा (जुमेरात) 10 जमादिउस सानिया सन 36 हिजरी में पेश हुआ।⁷ ज़ाहिर है कि आम असबाब के लिहाज़ से अब जनाबे अमीर^{अ०स०} का सिन लड़ाईयों की उमंगों का मुतकाज़ी नहीं था। उनसठ बरस की उम्र थी मगर आपका पच्चीस बरस की ख़ामोशी के बाद अब मैदाने जंग में आ जाना ऐलान कर रहा था कि हकीक़तन हमारा हरकत व सुकून सब फ़र्ज़ के एहसास का नतीजा होना चाहिये। फ़र्ज़ की पुकार पर हमें हमेशा जवाब देना चाहिये। उसूल और फ़र्ज़ के हुदूद में जज़बात का तकाज़ा और सिन का इख़तेलाफ़ कोई चीज़ नहीं है। अगर फ़र्ज़ हमारा ख़ामोशी

⁵तबरी जि/5, पेज/205-206

⁶तफ़सील के लिए देखो तबरी जि/5, पेज/203-205, 218, 219, 225 ⁷तबरी जि/5, पेज/219

का हो तो चाहे जवानी की तमाम उमंगें कदम उठाने पर आमादा कर रही हों फिर भी हमको अपनी जिन्दगी खामोशी के साथ गुज़ार देना चाहिये और जवानी सुकून के आलम में बसर करना चाहिये। और अगर फ़र्ज हमारा अमली इक़दाम का हो तो चाहे बुढ़ापे का इज़मेहलाल (कमज़ोरी) जिस्मानी कुव्वतों को मुतअस्सिर भी किये हो मगर हमें अज़्म व इरादे के कदमों पर खड़ा होना चाहिये और वह करना चाहिये जो जवाँमरदाना हिम्मत का तकाज़ा है।

उधर शाम में इशतेआल अंगेज़ी मुसलसल जारी रही। जनाबे उसमान का खून भरा कुर्ता और उनकी ज़ौजा नायला की कटी हुई उंगलियाँ मिम्बर पर आवेज़ों और उसके सामने गिरया व जारी, यह सिलसिला एक साल तक बराबर जारी रहा। बहुत से अहले षाम ने कसम खाई की वह औरतों के करीब न जाएंगे सिवा गुस्ले वाजिब के किसी दिन नहायेंगे नहीं और बिछौने पर सोएंगे नहीं जब तक उन आदमियों को जो क़त्ले उसमान में षरीक थे क़त्ल न कर लेंगे।⁸ इस तरह मुआविया ने पूरे शाम को हज़रत अली^{अ०स०} के खिलाफ़ बरअंगेख़्ता (भड़का) कर दिया मगर आपने अपनी जानिब से इस्लाह की कोशिश जारी रखी। चुनानचे इसी के लिये आपने जुरैर बिन अब्दुल्लाह बिजली को दमिश्क भेजा मगर इसका कोई भी नतीजा न निकला। आखिर को सिप्फ़ीन की जंग के लिये फ़ौजें मैदान में आ गईं। अब भी आपने फ़हमाइश और नसीहत का सिलसिला मौकूफ़ (टहरा) नहीं किया। बशीर बिन अम्र बिन मोहसिन अन्सारी, सईद बिन कैस हमदानी और शबस बिन रबई तमीमी इन तीन आदमियों को मुआविया के पास रवाना फ़रमाया कि वह जा

कर इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ और इताअत व इज्तेमा की तरफ़ दावत दें। मगर इस अमन पसन्दाना पेश क़दमी का जवाब यह मिला कि पलट जाओ मेरे पास से क्योंकि मेरे तुम्हारे दरमियान बस तलवार से फ़ैसला होगा।⁹

कहाँ तो हाकिमे शाम के यह जंगजूयाना अन्दाज़ और कहाँ हज़रत अली^{अ०स०} की वह गुप्तगू जो आपने नमुइन्दगाने शाम हबीब बिन मुस्लिम फ़हरी, शरहबील बिन समत और मअून बिन यज़ीद बिन अख़नस के सामने फ़रमाई थी जिसमे आपने कहा था: “तुम लोगों को किताबे खुदा और सुन्नते रसूल, बातिल को पामाल करने और हक़ को ज़िन्दा करने की जानिब दावत देता हूँ।”¹⁰ लेकिन आपकी यह दावत मुस्तरद कर दी गई और बिल आख़िर मुसलमानों का खून बेदरेग़ बहाया जाने लगा।

इस जंग के आगाज़ असना और अन्जाम में बहुत से जाज़िबे तवज्जोह उमूर पेश आते रहे। पहले यह कि इस जंग में भी हज़रत अली^{अ०स०} ने अपनी फ़ौज को हिदायत कर दी कि जब तक दुश्मन इब्तेदा न करे तुम जंग न करना।¹¹ आपने इन तमाम मारकों में जो नाम निहाद मुसलमानों के साथ पेश आये हैं बराबर अपनी फ़ौज को यह हिदायत फ़रमाई कि उस वक़्त तक जंग न छेड़ना जब तक कि वह इब्तेदा न करें। इसलिये कि तुम्हारी हुज्जत बेहमदिल्लाह हक्कानियत के लिहाज़ से तो तमाम है ही, अब यह तुम्हारा जंग में इब्तेदा न करना और उधर से इब्तेदा होना उनके मुक़ाबिले में मज़ीद इतमामे हुज्जत का बाइस हो जायेगा और जब लड़ाई छिड़ जाये और फिर दुश्मन को शिकस्त हो तो किसी

⁸ तबरी जि/5, पेज/235

⁹ तबरी जि/5, पेज/243

¹⁰ तबरी जि/6, पेज/4

¹¹ तबरी जि/5, पेज/238

भागते हुए का पीछा न करना। किसी ज़ख्मी पर हाथ न उठाना। किसी औरत की बेहुरमती न करना। किसी मक्तूल के आज्ञा क़ता न करना, ख़्याम में बिला इजाज़त दाख़िल न होना। उनके माल व असबाब को न लूटना और दुश्मनों की औरतें तुम्हें और तुम्हारे सरदारों को गालियाँ भी दे तो उन्हें कोई ईज़ा न पहुंचाना।¹²

इसके अलावा यह भी एक वाक़ेया सामने आया कि मुआविया के मुक़द्दमतुल ज़ैश (फ़ौज का वह हिस्सा जो बड़ी फ़ौज के लिए राह हमवार करता है) अबुल आवर सलमी ने नहरे फ़ुरात पर कब्ज़ा कर लिया और हज़रत अली^{अ०स०} के लश्कर पर पानी बन्द कर दिया। मजबूरन आपने पानी के लिये जंग का हुक्म दिया। आपके लश्कर ने अबुल आवर सलमी की फ़ौज से घाट छीन लिया और यह इरादा किया कि अब दुश्मन की फ़ौज पर इसी तरह पानी बन्द कर दिया जाये। जैसा उसने हम पर बन्द किया था। मगर हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने उसको ग़वारा न फ़रमाया। आपने कहा वह उनका फ़ेअ्ल (काम) था मगर तुम उन्हें पानी से न रोको। इतमिनान के साथ सेराब होने दो।

इससे यह सबक़ दिया जा रहा है कि हमारी मुख़ालिफ़ जमाअत इन्सानियत और अख़लाक़ में कितनी ही पस्त हो जाये मगर हमको हमेशा बलन्द ज़रफ़ी से काम लेना चाहिये। और उसके कमीना तर्ज़े अमल का मुआवेज़ा उसके मिस्ल से नहीं करना चाहिये बल्कि हमें इन्सानियत की बलन्दी का तहफ़फ़ुज़ करना ज़रूरी है।

जंगे सिफ़फ़ीन में हज़रत अली बिन अबी

तालिब^{अ०स०} को मुसलमानों की खूरेज़ी से बड़ी तकलीफ़ महसूस हो रही थी। चुनानचे आपने पुकार कर अमीरे शाम से कहा कि इससे क्या हासिल है कि आम मुसलमानों का खून फ़य्याज़ी के साथ बह रहा है। बस तुम निकल आओ मैदान में और मैं आजाऊँ और इस जंग का फ़ैसला हो जाये।¹³ मगर मुआविया ने इस ख़तरे को अपनी ज़ात के लिये मोल न लिया। वह दूसरों के गले कटवाते रहे और खुद कभी मुकाबले के लिये मैदान में नहीं आये। बरख़िलाफ़ इसके हज़रत अली^{अ०स०} जान को जान न समझते हुए बराबर मुजाहदीन की सफ़ों के आगे आगे थे। इसलिये कि उनका ज़मीर मुतमइन था। वह शहादत के मुश्ताक़ थे। उनका तो कौल था कि “मैं मौत के साथ इससे ज़्यादा मानूस हूँ जितना बच्चा आग़ोशे मादर से मानूस होता है।” बेशक वह उस मौत को ना—पसन्द करते थे जो बुजदिली के साथ बिस्तरे इस्तेराहत (आरामदेह बिस्तर) पर हो। चुनानचे असहाब से फ़रमाते थे कि याद रखो अगर तुम क़त्ल न हुए तो अपनी मौत मरोगे और कसम उस खुदा की जिसके कब्जे में मेरी जान है कि हज़ार ज़रबतें तलवार की जो सर पर पड़ें आसान हैं फ़र्श ख़्वाब पर ऐड़ियाँ रगड़ कर मरने से।¹⁴ चुनानचे उनका तर्ज़े अमल हमेशा इसी का मज़हर रहा था। इब्तेदा—ए—शबाब में जब हर इन्सान को ज़िन्दगी इन्तेहाई अज़ीज़ होती है रसूल का इरशाद कि अली मेरे बिस्तर पर सो रहो और अली का ब—सर व चश्म आमादा हो जाना इस का तज़केरा पहले हो चुका है। यह कोई मामूली बात नहीं थी। मालूम था कि खून के प्यासे दुश्मन की खिंची हुई तलवारें लिये क़त्ल पर

¹² तबरी जि/6, पेज/6

¹³ तबरी जि/6, पेज/203 ¹⁴ इरशाद पेज/128

आमादा हैं मगर वहाँ राहे हक़ में मौत तो खुशगवार समझी जाती थी।

इसी जंगे सिफ़ीन में एक मौके पर इमाम हसन^{अ०स०} से फ़रमाया:

“तुम्हारे बाप को कोई परवाह नहीं है कि मौत उस पर गिर रही है या वह खुद मौत के ऊपर गिर रहा है।”¹⁵ फिर ऐसे बाप के जो बेटे हों जिनके सामने यह सीरत हो और जिनके कानों में यह बातें पड़ रही हों उन्हें मौत का अन्देशा क्योंकर रह सकता है। चुनानचे हुसैन^{अ०स०} अपने भाई हसन और मोहम्मद बिन हनफ़िया के साथ इस जंग में बराबर से हिस्सा ले रहे थे और सख़्त से सख़्त मौकों पर सिबाते क़दम के जौहर दिखला रहे थे। तारीख़ ने एक ऐसे मौके की तस्वीर कशी करते हुए कि जब अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} के लश्कर का बड़ा हिस्सा शिकस्त खा चुका था लिखा है कि उस वक़्त नहीं रह गए थे अली^{अ०स०} के पास मगर बड़े फ़र्ज़ शनास और पुरजिगर अफ़राद, उस वक़्त आपने अपने घोड़े का रूख़ मैसरा की जानिब फ़ेरा कि जिधर क़बील—ए—रबीया के लोग अब तक दुश्मनों का मुकाबला कर रहे थे। रावी जिसका नाम ज़ैद बिन वहब जहनी हैं बयान करता है कि मैं देख रहा था अली^{अ०स०} को कि आप रबिया की फ़ौज की तरफ़ जा रहे थे और आपके फ़रज़न्द हसन^{अ०स०} व हुसैन^{अ०स०} और मोहम्मद हनफ़िया आपके साथ साथ थे और तीर अली के कान और शानों के पास से गुज़र रहे थे मगर आप के फ़रज़न्द बढ़ बढ़कर सिपर बन जाते थे और अपने बाप की हिफ़ाज़त करते थे।¹⁶ क्या यह जज़ब—ए—फ़िदाकारी और कुर्बानी का मामूली मुज़ाहरा है जो अली^{अ०स०}

की आँखों के सामने उन साहबज़ादों से ज़ाहिर हो रहा था? क्या इसके बाद कभी यह खयाल किया जा सकता है कि अली^{अ०स०} के यह बहादुर बेटे मौत के डर से किसी फ़र्ज़ में कोताही करें या किसी बातिल ताक़त के सामने जान के ख़ौफ़ से सर झुकायें।

इसी सिफ़ीन के मैदान में एक और मंज़र का भी मुशाहदा हुआ। वह यह कि ऐन जंग की हालत में हज़रत अली^{अ०स०} की निगाह आफ़ताब पर थी। इब्ने अब्बास ने सबब दरयाफ़्त किया। हज़रत ने फ़रमाया कि देखता हूँ कि नमाज़े ज़ोहर का वक़्त आया या नहीं। इब्ने अब्बास ने अर्ज़ किया, क्या यह नमाज़ का मौका है? जंग तो हो रही है। आपने फ़रमाया कि और यह हमारी जंग किस बात के लिये है? इसी नमाज़ के लिये तो जंग कर रहे हैं।

यह इबादते इलाही के फ़र्ज़ की अहमियत का एक बेमिसल अमली दर्स था कि तीरों की बारिश हो या आग बरस रही हो। जब नमाज़ का वक़्त आये तो लाज़िम है कि इस फ़र्ज़ के अदा करने के लिये खड़े हो जायें।

जंग को बहुत तूल हो चुका था। आख़िर एक दिन हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने तय कर लिया कि अब मुकम्मल फ़तह हासिल करने के बाद ही जंग को मौकूफ़ किया जायेगा। एक दिन और रात मुसलसल हंगाम—ए—दारो गीर (धड़ पकड़) बरपा रहा जिसके नतीजे में फ़ौजे शाम के क़दम उखड़ने लगे और मुआविया को शिकस्त का यकीन हो गया। मगर अम्र बिन आस ने उस दिन के लिये एक चाल उठा रखी थी। वह यह कि फ़ौरन कुरआन नैज़ों पर बलन्द कर लिये गए और निदा दी गई कि भाईयो यह किताबे खुदा ही हमारे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगी। शाम वाले सब हलाक हो गए तो शाम

¹⁵ तबरी जि/6, पेज/11

¹⁶ अख़बारुत्तेवाल पेज/184, तबरी जि/6, पेज/10

के हुदूद का कौन निगहबान होगा।¹⁷ हालाँकि आगाज़े जंग से पहले ही हज़रत अली^{अ०स०} कुरआन के फैसले की दावत दे चुके थे। मगर इस वक़्त कामयाबी के तख़य्युलात की बिना पर अली की दावत को मुस्तरद कर दिया गया। अब शिकस्त के आख़री अन्जाम से बचने के लिये कुरआन दरमियान में लाया जा रहा था। हज़रत अली^{अ०स०} ने अपनी फ़ौज वालों को इस मक्कारी और चालबाज़ी से आगाह किया और साफ़ फ़रमाया कि यह लोग न अहले दीन हैं और न अहले कुर्आन।¹⁸ मगर आपकी फ़ौज के बहुत से लोग आपसे मुन्हरिफ़ होकर इस बात पर मुसिर हो गए कि अब तलवार रोक लीजिये। नहीं तो हमारे आपके दरमियान तलवार चलेगी। यह बड़ी कशमकश का मौक़ा था। दुश्मन से मुक़ाबले के हंगाम में ऐसी सूरत पैदा हो जाना कि खुद अपनी फ़ौज में तलवार चलने लगे एक इन्तेहाई हौलनाक सूरतें हाल थी। जिसे हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ग़वारा न कर सकते थे। मजबूरन आपने जंग के इलतिवा (जंग बन्दी) का हुक्म दिया और तय पाया कि एक हक़म अहले शाम की तरफ़ से नामज़द हो और एक अहले कूफ़ा की तरफ़ से। मगर अहले शाम की तरफ़ से अम्र बिन आस ऐसा अमीरे शाम का नफ़से नातिका (बोलने वाला) मुक़र्रर किया गया और जब हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ने चाहा कि मालिके अश्तर या अब्दुल्लाह बिन अब्बास या किसी दूसरे ऐसे ही अपने मुख़लिस और खैरख़्वाह को अपनी जानिब से मुक़र्रर करें। तो वही फ़ौज वाले फिर बिगड़ गए कि यह लोग तो बिल्कुल इस जंग के ज़िम्मेदार हैं हम उनको क्यों कर

¹⁷ तबरी जि/6, पेज/46

¹⁸ तबरी जि/6, पेज/27, इरशाद पेज/144

मुक़र्रर करें।¹⁹ आख़िर सबने अबू मूसा अशअरी को जो पहले ही हज़रत अली^{अ०स०} की मुवाफ़िक़त से गुरेज़ कर चुके थे अपनी जानिब से मुक़र्रर किया। मसलहतें वक़्त यही थी क्योंकि अपनी जमाअत में खूरेज़ी का इन्सेदाद (रोकना) इसी पर मौकूफ़ था कि हज़रत बा—दिले नख्वास्ता (ना चाहते हुए) उसको बरदाष्ट कर लें। यहाँ तक कि नतीजा सबकी आँखों के सामने आजाये। ताहम आपने जो सुलहनामा लिखवाया उसका मज़मून हस्बे ज़ैल था।

“अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ज़िम्मा लेते हैं अहले कूफ़ा और तमाम मुसलमानों का जो उनके साथ हैं और मुआविया ने ज़िम्मेदारी ले ली है अहले शाम और तमाम अपने तरफ़दारों की कि हम अल्लाह और उसकी किताब के फैसले पर दारोमदार रखते हैं और सिवा किताबे खुदा के कोई शै हम में फैसला कुन नहीं होगी और किताबे खुदा हमारे सामने रहेगी। शुरू से लेकर आख़िर तक हम ज़िन्दा करेंगे उसी बात को जिसे खुदा ज़िन्दा करे। और मुर्दा करेंगे उसको जिसे किताबे खुदा मुर्दा करे। लिहाज़ा हक़मैन (दोनों फैसला करने वालों को) को लाज़िम होगा कि वह किताबे खुदा पर नज़र करें और जो कुछ उसमें मिले उस पर अमल करें और अगर किताबे खुदा में उन्हें कोई हिदायत नज़र न आये तो रसूले खुदा की सुन्नत पर जो इख़तेलाफ़ी न हो अमल किया जायेगा।”

इस मुआहदे के अलफ़ाज़ से साफ़ ज़ाहिर है कि हक़मैन (दोनों फैसला करने वालों) को अपनी ज़ाती राय से जो किसी सियासते दुनयवी का तकाज़ा हो फैसला करने का हक़ नहीं दिया गया था। चुनानचे हज़रत अली^{अ०स०}

¹⁹ तबरी जि/6, पेज/28

ने खुद हकमैन से जो फैसले के लिये मुकर्र हुए थे फरमाया था कि “तुम इस शर्त पर हकम (काज़ी) हो कि किताबुल्लाह की रू से फैसला करना और अगर तुम्हें किताबे खुदा की रू से फैसला न करना हो तो तुम्हें अपने को हकम नहीं समझना चाहिये।”²⁰ दूसरे अशखास को भी यह बता दिया गया कि हकमैन पर यह शर्त लगा दी गई है कि वह कुरआन की बिना पर फैसला करें और अपनी जाती राय को काम में न लायें।²¹

यह इकरार नामा 13 सफर सन 37 हिजरी को पाय-ए-तकमील तक पहुँचा।

बावजूद हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} की इस दूर अन्देशी और एहतियात के फिर भी साथ वाले मुफ़सिद (फ़सादी) आदमी फ़ितना व फ़साद बरपा करने से बाज़ न आये और अभी इकरार नामा लिखा ही गया था कि उसी वक़्त हज़रत अली^{अ०स०} की फ़ौज में यह आवाज़ बलन्द हो गई कि इन्सानों को हकम (फ़ैसला करने वाला बनाना) दुरुस्त नहीं। “ला-हकमा इल्लल्लाह” यानी हकम होना अल्लाह से मख़सूस है। इस आवाज़ का सबसे पहला बलन्द करने वाला कबील-ए-बनी तमीम का एक शख्स उरवा बिन अदीय्या था।²²

यह जमाअते ख़वारिज (हज़रत अली^{अ०स०} की मुख़ालिफ़ जमाअत) का संगे बुनियाद था। उन लोगों ने हज़रत अली^{अ०स०} से इसरार किया कि पहले मुआविया से जंग कीजिये हम आपके साथ हैं। आपने वही जवाब दिया जो रसूले खुदा^{स०अ०} सुलहे हुदैबिया के बाद देते थे।

“हम ने नविश्ता (लिखी हुए सनद) दे दिया

है। शराएत तय किये हैं। अहदो मीसाक (वादा) कर लिया है। अब उसकी मुख़ालिफ़त मुमकिन नहीं है। कुरआन में हुक्म हुआ है कि वफ़ा करो अहदो पैमान के साथ और क़सम खाने के बाद उसकी मुख़ालिफ़त न करो जबकि तुम ने अल्लाह को इसका ज़ामिन बना दिया है और यकीनन अल्लाह तुम्हारे अफ़आल व आमाल पर मुत्तेला है।”

आपने इस सख़्ती के साथ मुआहदा पर क़याम किया मगर हकमैन ने खुद शराएते मुकर्रर (की गई शर्तों) की पाबन्दी नहीं की और किताबे खुदा व सुन्नते रसूल से कोई सरोकार ही नहीं रखा। चूँकि अबू मूसा सादा लौह आदमी थे और जनाबे अमीर^{अ०स०} से कोई खुलूस और मुहब्बत भी नहीं रखते थे। उन्हें अम्र बिन आस ने अपनी सियासत का षिकार बना लिया। इस तरह कि जब वक़्ते मुकर्रर पर “दूमतुल जन्दल” में जो कूफ़े व षाम के लिहाज़ से बिल्कुल वसत (बीच) में वाक़े था और इसलिये फैसला के लिये वहीं इज्तेमा तय पाया था। यह लोग यकजा हुए। रोज़ाना मुलाकात और तबादल-ए ख़यालात का सिलसिला कायम हो गया तो अम्र बिन आस ने यह तरीक़ा इख़्तियार किया कि जब गुफ़्तगू हो तो अबू मूसा अशअरी को अपने ऊपर मुक़द्दम करार दें और कहें कि आप बुजुर्ग हैं। रसूले खुदा^{स०अ०} की सहाबियत का मुझसे ज़्यादा शरफ़ रखते हैं। आप पहले तकरीर कीजिये। फिर मैं जो कहना है कहूँगा। इस तरह अम्रे आस ने अबू मूसा अशअरी पर अपने खुलूस व अकीदत का असर जमाया और आइन्दा के लिये जो मन्सूबा सोचा था उसकी तमहीद कायम कर दी।

फिर ज़ेरे बहस मसअले के मुतअल्लिक़ तबादल-ए-ख़यालात किया और अबू मूसा

²⁰ असदुल गाबा जि/3, पेज/246

²¹ तबरी जि/6, पेज/32, इरशाद पेज/44

²² तबरी जि/6, पेज/30-31

को यह पट्टी पढ़ाई कि हम दोनों फ़रीक़ यानी हज़रत अली^{अ०स०} और मुआविया को एक साथ माज़ूल (हटा) कर दें। और फिर मुसलमानों को इख़्तियार दें कि वह अज़ सरेनौ (नय सिरे से) जिसको चाहें मुन्तख़ब कर लें। अबू मूसा इस फ़रेब में आ गए और ब-ख़याले खुद मुत्तफ़का हैसियत से यही तय कर लिया। जब फ़ैसले का वक़्त आया और तरफ़ैन (दोनों तरफ़) के आदमी फ़ैसला सुनने को जमा हुए तो अम्रे आस ने हस्बे आदत अबू मूसा अशअरी से कहा “बिस्मिल्लाह! आप फ़रमाईये जो कुछ फ़रमाना है।” उनको तो आदत पड़ी ही थी कि हमेशा गुप्तगू में पहल वह करें। वह बिला उज़्र तक़रीर के लिये आमादा हो गए। अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने जो समझदार आदमी थे मुतनब्बेह (ख़बरदार) किया कि देखो अम्र बिन आस कहीं चोट न दे दे। पहले उसे तक़रीर कर लेने दो। फिर तुम तक़रीर करना। मगर अबू मूसा अशअरी ने कहा कि नहीं, हमने बाहम मुत्तफ़ेका तौर पर एक चीज़ तय कर ली है। चुनानचे खड़े हो गए और हम्द व सना के बाद कहने लगे कि “हमने इन्तेहाई ग़ौर व ख़ौज़ के बाद ऐसी बेहतरीन सूरत तय की है जिससे इफ़तेराक़ (तफ़रक़ा) व इख़तेलाफ़ का ख़ातिमा हो सकता है। वह यह है कि हम दोनों अली^{अ०स०} और मुआविया दोनों को माज़ूल कर दें और ख़िलाफ़त अज़ सरेनौ मुसलमानों के हवाले कर दें। कि वह जिसे चाहें मुन्तख़ब कर लें।” वह यह कह कर जूँही बैठे अम्र आस ने खड़े हो कर कहा कि “हज़रात! आप लोगों ने अबू मूसा अशअरी की तक़रीर सुनी वह अली के नुमाइन्दे हैं और उन्होंने अली को माज़ूल कर दिया है मैं मुआविया का नुमाइन्दा होने की हैसियत से अली के माज़ूल करने में उनसे मुत्तफ़िक़ हूँ मगर मुआविया को मैं

बरकरार रखता हूँ।” यह सुनना था कि अबू मूसा चीख़ उठे।

“अरे यह तूने क्या किया? खुदा तुझसे समझे, तूने ग़द्दारी की, बेईमानी की, तू कुत्ते की तरह है कि चाहे उस पर हमला करो या उसे उसके हाल पर छोड़ दो। वह भौकने से बाज़ न आयेगा।”

अम्रे आस ने जवाब दिया।

“तुम्हारी मिसाल गधे की सी है जिसकी पुश्त पर किताबें लाद दी गई हों।”

मजमे में से कोई अबू मूसा की तरफ़ झपट कर हमला आवर हुआ और कोई अम्र आस पर। गरज़ इस हड़बन्ग और इन तहज़ीब व अख़लाक़ के मुज़ाहरों के साथ यह इज्तेमा मुन्तशिर हो गया।²³ ज़ाहिर है कि इस तरह की मक्काराना धांधली को किसी बा-ज़ाबता फ़ैसले का दर्जा दिया ही नहीं जा सकता था चुनानचे उसे किसी ने भी सही तस्लीम न किया और इख़तेलाफ़ जूँ का तूँ कायम रह गया लेकिन उससे हज़रत अली^{अ०स०} की जमाअत में इन्तेशार में कुछ और ज़्यादाती हो गई।

उधर ख़्वारिज ने अपनी जमाअत को मुनज़ज़म करके मुकाबले की तय्यारी कर दी जिससे सन 38 हिजरी में जंगे नहरवान की सूरत पेश आई। वाक़ेयात के इस तवील सिलसिले में बड़े नताएज बरामद हुए थे और महसूस होता था कि एक कायद को अपने साथ वालों के हाथों जबकि वह ख़ालिस व मुख़लिस, यकदिल और हमआहंग न हों कितनी कषमकष और रुहानी तकलीफ़ का सामना हुआ है और इससे मक़सद को किस दर्जा नुक़सान पहुँच जाता है।

²³ तबरी जि/6, पेज/40

नहरवान के बाद भी यह फ़ितने और शोरिशें बिल्कुल ख़त्म नहीं हुईं। एक तरफ़ ख़वारिज नहरवान के हम ख़याल अफ़राद जो जंग में नहीं गए थे और शहरों के अन्दर मुकीम थे हज़रत अमीर^{अ०स०} के ख़िलाफ़ फ़िज़ा में इन्तेशार पैदा करते रहते थे और दूसरी तरफ़ अमीरे शाम मुआविया जिन्होंने ने अहले कूफ़ा के इफ़तेराक़ का फ़ाएदा उठा कर अपनी कुव्वत को ज़्यादा मुनज़्जम कर लिया था बराबर अतराफ़े ममलिकत (हुकूमत) में अपनी फ़ौजें भेजकर बद-अमनी का सिलसिला कायम किये हुए थे जिसमें खुफ़िया और एलानिया हर किस्म के एकदामात शामिल थे। मसलन मिस्र में जनाबे अमीर^{अ०स०} के बहुत बड़े मुआविन (मददगार) मालिके अशतर का ज़हर दिलवा कर ख़ात्मा किया।²⁴ उसके बाद मोहम्मद बिन अबी बकर गवर्नर बना कर भेजे गए तो अम्र बिन आस ने खुतूत लिखकर खुद मिस्र के बाज़ अमाएद (हम ख़याल लोगों) से साज़बाज़ की और फिर अपनी फ़ौज लेकर हमला कर दिया। उधर से शाम की फ़ौज और इधर से खुद मिस्र वालों का एक मुसल्लह (अस्लहों से लैस) लश्कर मोहम्मद बिन अबी बकर मैय अपनी जमाअत के चक्की के दो पाटों में आ गए।²⁵ आख़िर उनकी फ़ौज ने शिकस्त खाई और खुद इन्तेहाई बेदर्दी के साथ क़त्ल किये गए बल्कि लाश को भी आग में जला दिया गया।²⁶ मोहम्मद बिन अबी बकर के बाद मिस्र में मुआविया का तसल्लुत कायम हो गया। इसी से उनकी हिम्मत और बढ़ी। चुनानचे सन 39 हिजरी में नोमान बिन बशीर की सरकदर्गी में दो हज़ार की फ़ौज ने ऐनुत तमर

पर हमला किया जो नाकामी के साथ पसपा हुआ।²⁷ सुफ़ियान बिन औफ़ ग़ामदी ने छे हज़ार की फ़ौज के साथ अम्बार पर हमला किया और अषरस बिन हिसान बकरी को जो जनाबे अमीर^{अ०स०} की तरफ़ से वहाँ मुकर्रर थे उनके तीस हमराहियों समेत क़त्ल कर दिया और तमाम माल व असबाब लूट का वापस चला गया।²⁸ अब्दुल्लाह बिन मुसअदा ख़ज़ारी ने सत्तरह सौ आदमियों के साथ तैमा पर हमला किया। हज़रत अली^{अ०स०} ने मुसय्यब बिन नजबा फ़ज़ारी को उसके मुकाबले के लिये भेजा जिन्होंने जंग करके उसको शिकस्त दी और उसने शाम की जानिब फ़रार किया।²⁹ इसी सूरत में ज़हाक बिन कैस को तीन हज़ार फ़ौज के साथ भेजा गया जो लूट मार करती हुई कादसिया के हुदूद तक पहुंच गई।³⁰ और हुज़्र बिन अदी फ़ौज को लेकर गए तो उसने फ़रार इख़्तियार किया। मालूम होता है कि सिफ़फ़ीन की जंग के बाद महसूस हो गया था कि हज़रत अली^{अ०स०} से खुले मैदान में मुकाबला करके कामयाबी हासिल कर लेना मुमकिन नहीं है। इसलिये यह गोरीला जंग का तरीक़ा इख़्तियार कर लिया गया था जिससे इस्लामी ममलिकत में एक मुसतक़िल ख़लफ़िशार कायम रखने का इन्तेज़ाम किया गया था। इस सिलसिले का सबसे अन्दोहनाक (दर्दनाक) सानेहा बसर बिन अबी इरताह का तीन हज़ार की फ़ौज के साथ हिजाज़ पर हमला था जिसने मदीने और मक्के वालों से ब-जब्र बैयत लेने के बाद यमन का रुख़ किया और वहाँ कई आदमियों को क़त्ल किया। उबैदुल्लाह बिन अब्बास का मकान लूटा और

²⁴ तबरी जि/6, पेज/54 ²⁵ तबरी जि/6, पेज/57

²⁶ तबरी जि/6, पेज/60

²⁷ तबरी जि/6, पेज/77 ²⁸ तबरी जि/6, पेज/78

²⁹ तबरी जि/6, पेज/78 ³⁰ तबरी जि/6, पेज/78

उनके दो कमसिन बच्चों को ज़िब्ह करा दिया। फिर जब हज़रत अली^{अ०स०} ने मुकाबले के लिये लश्कर भेजा तो वह मैय अपनी फौज के फ़रार कर गया।³¹

यह बुज़दिली का तरीका—ए—जंग हज़रत अली^{अ०स०} के लिये इन्तेहाई तकलीफ़ का बाइस था। मजबूरन फिर आपने तहय्या फ़रमा लिया था कि दमिश्क़ पर फौज कशी करके हमेशा के लिये इस किस्से को ख़त्म किया जाये। जिसके लिये आपने एक निहायत पुरजोर खुत्बा पढ़कर मुसलमानों को आमादा कर लिया मगर उसके बाद एक हफ़ता भी पूरा न हुआ था कि मस्जिद में ऐन हालते नमाज़ में 19/रमज़ान को आपके सरे मुबारक पर इब्ने मुलजिम मुरादी ने ज़हर से बुझी हुई तलवार लगई।³² जिसके असर से 21/रमज़ान सन 40 हिजरी को आपने दुनिया से रेहलत फ़रमाई। उस वक़्त हुसैन इब्ने अली^{अ०स०} छत्तीस बरस की उम्र को पहुँच चुके थे। इस तूलानी दौर में हुसैन^{अ०स०} ने अपने वालिदे बुजुर्गवार अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} से क्या कुछ देखा, क्या कुछ सुना और कितना असर लिया?

मुसल्लमुस सुबूत (पुख्ता सुबूत) शीई मोअ्तकेदात (अकीदे) से क़त—ए—नज़र (हट कर) करने के बाद भी आम तारीख़ी हालात और ज़ाहरी असबाब के मातहत यह अहम तजरेबात और गर्राँ क़द्र तालीमात जो एक रूब्आ सदी (25 साल) से ज़्यादा तक हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} को हासिल होते रहे। एक इन्सान के बलन्दी—ए—अख़लाक़ व सिफ़ात और पुख्ता कारी के क़तई ज़ामिन और ज़िम्मेदार हैं।

(बक़िया पेज नं० 16 का)

“एहसान का बदला एहसान” की दावत दे रहा है। वह यह बात कभी पसन्द नहीं करता कि मेरा ज़िक्र तो बाकी रहे और इस ज़िक्र को जारी रखने के लिए मर मिटने वाले बिल्कुल ही मर मिट जाएं। यही वजह है कि इस्लाम के संस्थापक जनाब इब्राहीम^{अ०} जिनके लिए कुरआन में इर्शाद है, “उन्होंने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है” उनसे सम्बद्ध यादगारों को इबादत का अंग घोषित कर दिया है।”

चुनान्चे यह कुर्बानी उस कुर्बानी की याद है, यह “सफ़ा” और “मरवा” के दरमियान “सइ” (दौड़ना) मां की बेताबी की याद है, यह शैतानों पर कंकरियां मारना, कुर्बानी के समय बाधक होने वाले शैतान की याद है और इनमें हर एक यादगार का ताज़ा रखना मूल इबादत क़रार दिया गया है और हर वर्ष करोड़ों रुपया खर्च करना “वाजिब” कर दिया गया। बस यहीं से हमको हमारा न्याय आवाज़ देता है कि 10 ज़िल्हिज्जा के बाद इस कुर्बानी की समाप्ति 10 मुहर्रम को “ज़िब्हे अज़ीम” के नाम से कुरआन मजीद में मौजूद हैं जिसके लिए सब ही मुफ़स्सिरीन (कुरआन के भाष्यकारों) खुले या दबे शब्दों में इसके काएल हैं, इसको मानते हैं कि वह हज़रत पैग़म्बर^{स०} के नवासे की यादगार कुर्बानी, करबला की घटना है। अतः इस्लामी साहित्य के आधार पर “एहसान का बदला एहसान” के अनुसार “हज” को सामने रखकर न्याय हम सब मुसलमानों से मांग कर रहा है कि गौर करें कि “ख़लीले खुदा” अल्लाह के दोस्त की कुर्बानी की इतनी व्यवस्था और पैग़म्बरों के सरदार की कुर्बानी की याद के लिए इस्लाम में कोई गुनजाइश नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम सब मुसलमान हज़रत पैग़म्बर^{स०} के पुत्र के हत्यारों के षड्यन्त्र का शिकार हों?

³¹ तबरी जि/6, पेज/80-81

³² तबरी जि/6, पेज/84-85

हज क्या है?

मौलाना सै० मुहम्मद शाकिर नक्वी साहब अमरोहवी

इस प्रश्न का सरसरी जवाब तो यह है कि “हज” अल्लाह की इबादतों में से एक विशेष उपासना है जो कि केवल “मक्के” ही में अदा की जा सकती है बस फिर यहीं से एक प्रश्न यह उभरता है कि इस इबादत में आखिर ऐसी क्या विशेषता है जिसके कारण यह इबादत मक्के के अतिरिक्त और किसी स्थान पर अदा नहीं की जा सकती। यह प्रश्न उस समय और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम यह सोचते हैं कि प्रत्येक वस्तु अल्लाह की है, हर स्थान अल्लाह का है और अल्लाह हर जगह है और वह हर स्थान से सुनता है, उसकी इबादत हर जगह की जा सकती है। यह केवल मक्के की क्या विशेषता है कि यदि कहीं और हज किया जाय तो “हज” नहीं होता। इस प्रश्न का उत्तर बहुधा यह भी दिया जाता है कि चूंकि यह इबादत सम्पूर्ण संसार में पाए जाने वाले मुसलमानों की सामूहिक (इज्तिमाई) इबादत है अतः इसके लिए केवल एक ही जगह सम्भव हो सकती है। किन्तु यह उत्तर पूर्णतयः सन्तोषजनक नहीं है, क्योंकि “हज” की दुआओं में और उसके संस्कारों में इज्तिमाइयत अर्थात् “सामूहिकता” नज़र नहीं आती। अपितु कुछ “नफ़सी-नफ़सी” “अरे मैं अरे मैं के महशर नुमा नमूने प्रलय सरीखे दृष्टांत अवश्य मिलते हैं और बस दुआ, प्रार्थनाएं देखिए, “हज” के नियमों को पढ़िये, न कोई ऐसा आदेश मिलेगा जिसमें दूर-दूर से आने वालों से सम्बन्ध बनाने पर बल दिया गया हो, न एक दूसरे से बातचीत करने की शिक्षा, तालीम मिलेगी न कोई ऐसी दुआ मिलेगी जिसमें राजनीतिक एकता और सर्वसम्मति पर

बल दिया गया हो, न ऐसी रिवायतें मिलेंगी जिसमें राजनैतिक सभाओं, जुलूसों आदि के द्वारा बेदारी और जागृति पैदा करने की शिक्षा दी गयी हो। न ही ऐसे व्याख्यान और भाषण ही मिलेंगे जो केवल “हज” के लिए विशेष रूप से हों और सामान्य इस्लामी समस्याओं के समाधान के लिए इस्लामी विधि द्वारा निर्धारित कर दिये गये हों। न कोई ऐसा अमल मिलेगा जिससे मानसिक जागृति, राजनैतिक चेतना, सामाजिक विकास जैसी आधुनिक परिभाषित चीजों को बढ़ावा दिया गया हो। वहाँ तो बस “हज” के दिन आते ही प्रत्येक प्रकार के अत्याचार व आतंक से दूरी, लूटमार में अलगाव, युद्ध, लड़ाई आदि से अलग हो जाने की सिफ़ारिश, दुश्मनों तक से तलवार रोक लेने की इच्छा बल्कि “एहराम” की हालत में तो मामूली सी चूटी, खटमल, मच्छर तक को मारना हराम है। सुगन्ध से दूर रहने की ताक़ीद है, साज-सज्जा को त्याग देने की मांग है।

प्रश्न यह होता है कि क्या यह मांगें घर बैठे ही पूरी नहीं हो सकती थीं? क्या यह दुआएं अपनी-अपनी मस्जिदों में नहीं मांगी जा सकती थीं? क्या हमारे घर में हमारी प्रार्थनाओं को पूरा करने वाला अल्लाह इन दुआओं को रद्द कर देता? फिर क्यों हज़ारों रुपया खर्च करके, हज़ारों मील यात्रा के कष्टों को सहन करके, विशेष वेशभूषा में लगभग वही सब कुछ मांगा गया है जो सामान्यतः रोज़ाना की प्रार्थनाओं में मांगा जाता रहा है? वही नमाज़ें हैं जो रोज़ाना अदा करते चले आए हैं, फिर आखिर क्यों इतनी दूर खींच कर लाया गया है? अवश्य ही इसमें कोई

राज है और यह राज हर सोचने समझने की क्षमता रखने वाले को आमंत्रित करता है कि वह खुले दिमाग से सोचे कि आखिर “हज” क्या है? और क्यों वाजिब है? क्यों अनिवार्य कर्तव्य है? क्यों वह अल्लाह जो हर जगह मौजूद है, हर एक की सुनता है बल्कि सबके दिल के भेदों से भी अवगत है। वह आखिर घर में बैठकर किये जाने वाले “हज” को स्वीकार करने पर क्यों तैयार नहीं है? आखिर “मक्के” में किस चीज़ के दर्शन होंगे? क्या स्वयं अल्लाह का दर्शन होगा? या अल्लाह की आवाज़ सुनने को मिलेगी? खुली बात है कि वहां ऐसा कुछ भी नहीं होगा बल्कि केवल एक चौकोर साधारण सा कमरा होगा, एक काला सा पत्थर होगा, “मक़ाम-ए-इब्राहीम” होगा। दो पथरीले टीले होंगे, “अरफ़ात” नाम का मैदान होगा, फिर तीन ज़मीन में गड़े हुए पत्थर होंगे, एक कुर्बानी करने का स्थान होगा। यह है वह सारा संसार जो “हज” की दुआओं और क्रियाओं में शर्त स्वरूप दिया गया है। जिसका साफ़-साफ़ अर्थ यह है कि इन तमाम दुआओं और क्रियाओं का इनसे स्वीकार होना इन जगहों के सम्मिलन पर आश्रित है यानी अगर “हज” की किसी भी क्रिया को करने में इन स्थानों का ध्यान रखने में कुछ भी चूक हो जाए तो “हज” स्वीकारे जाने योग्य नहीं।

स्पष्ट है कि फिर इसका यही अर्थ होगा कि केवल यही स्थान ही “हज” के मूल आयाम हैं जिनसे एक विशेष ढंग से यश प्राप्त करने का नाम हज है, जिसके लिए इतने कष्ट और इतना रुपया व्यय कराया गया है। बस यहीं से दूसरा प्रश्न यह उभरता है कि आखिर यह स्थान क्या हैं? और क्यों इतने महत्वपूर्ण है कि अल्लाह की इबादत से शर्त के रूप में सम्बद्ध हैं? क्या इन स्थानों का सीधा अल्लाह से कोई सम्बन्ध रहा है? तो इसका उत्तर में हमें यह ज्ञात होगा कि इन स्थानों का अल्लाह से कोई सीधा सम्बन्ध

नहीं है, न अल्लाह ने किसी स्थान पर ठहर कर, विराज करके इसको महत्व प्रदान किया है न वह किसी स्थान पर आकर खड़ा हुआ है और न ही किसी जगह को उसने स्पर्श किया है, (मआज-अल्लाह) क्योंकि अल्लाह का शरीर आदि से कोई सम्बन्ध ही नहीं। लेकिन हां, यह स्थान अल्लाह के कुछ ख़ास बन्दों की किन्हीं घटनाओं आदि से सम्बद्ध हो गये हैं, जैसे “मक़ाम-ए-इब्राहीम” वह पत्थर है जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम^अ ने काबे का निर्माण किया था। “सफ़ा और मरवा” वह दो टीले हैं जिनपर अल्लाह की एक ख़ास बन्दी, नबी की बीबी, नबी का मां अपने मासूम, छोटे शिशु की ममता में पानी के लिए बार-बार दौड़ी थी और स्वयं “काबा” सम्भव है कि उस शहीद बेटे की क़ब्र हो जिसकी उसके अत्याचारी और दुष्ट भाई “काबील” ने हत्या कर दी थी और आश्चर्य नहीं कि मां बाप यानी “आदम” और “हव्वा” भी अपनी वसीयत के अनुसार बेटे के अगल-बगल दफ़न हों और फिर यह भी सम्भव है कि इब्राहीम^अ भी यहां दफ़न हों। बहरहाल यह सब कुछ नहीं तो एक अल्लाह के ख़लील, दोस्त और अल्लाह के ज़बीह (उसकी राह में कुर्बान होने वाले) के हाथों बनी हुई पाक यादगार अवश्य है जिसे इब्राहीम^अ और इस्माईल^अ ने अल्लाह के नाम पर बनाया था, जैसा कि कुरआने मजीद का इरशाद है। इन उपमाओं, निस्बतों को दृष्टिगत रखते हुए जब इन स्थानों के महत्व पर गौर किया जाए और हर वर्ष अरबों डालर खर्च हो जाने पर गौर किया जाए तो केवल इसके अलावा दूसरा निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि इस्लाम की नज़र में, इस्लाम के संस्थापकों के हुक्क की अदाएगी इस्लामी इबादतों का महत्वपूर्ण अंग है क्यों कि अल्लाह जो बेनियाज़ है, पूर्ण रूपेण निस्प्रह है, जो हमारी इबादतों का मुहताज नहीं व स्वयं अपने बन्दों को

(बकिया पेज नं0 14 पर.....)

मुख्य समाचार

मूसल की आज़ादी दाइश की हार की ओर अहम क़दम

हुज्जतुल इस्लाम सै० हसन नसरुल्लाह

न्यूज़ एजेंसी अब्ना की रिपोर्ट के मुताबिक, सिक्रेटरी जनरल हिज़बुल्लाहे लेबनान व काइदे तहरीके इस्लामी मुजाहिमत सै० हसन नसरुल्लाह ने मूसल की आज़ादी के सिलसिले में ख़िताब करते हुए कहा कि मूसल की आज़ादी एक अज़ीम कामयाबी है उन्होंने दाइश का मुकाबिला करने के वुजूब के सिलसिले में इराक़ की मरजइयत के फ़त्वे को इस अज़ीम कामयाबी का आगाज़ क़रार दिया। उन्होंने कहा: मूसल में कामयाबी के बारे में बात चीत का आगाज़ मरजइयत के किरदार की अहमियत से होना चाहिये। इराक़ में आयतुल्लहिल उज़मा सै० अली हुसैनी सीस्तानी का फ़त्वा अज़ीम कामयाबियों में एक बहुत अहम मोड़ था क्योंकि उस फ़त्वे ने लोगों को हैरत और सर गरदानी से निजात दिलाई, उस फ़त्वे ने दुश्मन को सही तौर पर निशाना बनाया और इराक़ी अवाम की ज़िम्मेदारों का ब-ख़ूबी तअय्युन किया, ख़तरे का मुकाबिला करने की नौइयत को मुताअय्यन किया और मिल्लते इराक़ को ना उम्मीदी से छुटकारा दिलाया। दाइशी बग़दाद तक पहुंच चुके थे। हम सबको याद है कि दाइश बग़दाद तक पहुंच चुके थे और बहुत तेज़ रफ़्तारी से पेश क़दमी कर रही थी यहां तक इराक़ में सबको फ़िक्रमंद, परीशान और ना उम्मीद कर दिया था लेकिन आयतुल्लाह सीस्तानी ने जिहाद का फ़रमान दिया और फ़रमाया कि जो लोग दाइश के साथ जंग में मारे जाएं वह शहीद हैं और यूं उन्होंने दाइश के मुकाबिले में अहम क़दम उठाया। इब्तिदा में बाज़ लोगों को ग़लत फ़हमी हुई थी कि गोया कि दाइश वाकई इस्लामी हुकूमत है लेकिन दीनी मरजइयत ने दुश्मन का अस्ल चेहरा ब-ख़ूबी बता दिया और जंग की सन्त मुताअय्यन कर ली। मरजइयत के फ़त्वे की बरकत से सैंकड़ों नव जवान मुजाहेदीन की सफ़ों में शामिल हुए। और अल हशद अश्शअबी के मुकाबिले में मुअरिस्सर रिज़ाकार फ़ोर्स के तौर पर उभरकर सामने आई। खुदा का शुक्र है कि आयतुल्लाह सीस्तानी ने बेहतरीन दूर अंदेशी से इस मुहिम को सर कर लिया है।

मूसल की आज़ादी दाइश की नाबूदी का नुक़त-ए-आगाज़: इराक़ी वज़ीरे आज़म

न्यूज़ एजेंसी अब्ना के मुताबिक़ इराक़ी वज़ीरे आज़म हैदरुल इबादी ने एक बयान जारी किया है जिसमें कहा गया है कि इराक़ी वज़ीरे आज़म ने मशरिके वुस्ता के बारे में बरतानवी वज़ीर से मुलाक़ात करते हुए कहा कि आज़ाद कराए गए इलाक़े की अवाम की मदद से इराक़ी सेना ने मूसल को फ़त्हा करते हुए दाइश के ख़ात्मे की इब्तिदा कर दी है। यह कामयाबी शियों के नुमायां आलिमे दीन आयतुल्लाहिल उज़मा सै० अली हुसैनी सीस्तानी की बेहतरीन सूझ बूझ और दूर अंदेशी का बेहतरीन सबूत है जिसपर इराक़ी अफ़वाज़ को नाज़ है। उन्होंने कहा कि इराक़ी हुकूमत अवाम के इत्तिहाद और यक जहती से इस्तिफ़ादा करते हुए दाइश के बाद आने वाली किसी भी मुश्किल का ब-ख़ूबी सामना करेगी। बरतानवी वज़ीर ने भी इस मुलाक़ात में इराक़ के इत्तिहाद और सलामती की हिमायत करने का यकीन दिलाया। याद रहे कि 10 जुलाई को इराक़ी वज़ीरे आज़म ने मूसल की मुकम्मल फ़त्हा का एलान कर दिया था।

आयतुल्लाह सीस्तानी को भारत के वरिष्ठ शिया धर्मगुरु प्रोफ़ेसर मौलाना कल्बे जवाद का बधाई संदेश

इराक़ के मूसिल शहर से तकफ़ीरी आतंकवादी गुट दाइश का अंत हो जाने पर भारत के वरिष्ठ शिया धर्मगुरु कायदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी प्रोफ़ेसर अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी ने आयतुल्लाह सीस्तानी को पत्र लिखकर मुबारकबाद दी है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार मूसल शहर जो तकफ़ीरी आतंकवादी गुट दाइश का मुख्य ठिकाना था उसकी इराक़ी सेना और स्वयं सेवी बलों के हाथों आज़ादी पर जहां एक ओर पूरे इराक़ में जश्न का माहौल है वहीं लखनऊ में भी लोगों ने खुशियां मनाई और दाइश जैसे खूंबार आतंकी गुट से मिली मुक्ति पर इराक़ के सबसे बड़े धर्म गुरु आयतुल्लाह सीस्तानी के फ़ैसले की भी जमकर सराहना की है। आतंकवादी गुट दाइश को उसके मुख्य गढ़ मूसिल में मिली करारी हार के बाद मजलिसे उलमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी ने एक पत्र लिखकर इराक़ के वरिष्ठ शिया धर्मगुरु आयतुल्लाह सै० अली सीस्तानी को बधाई दी है। मौलाना कल्बे जवाद ने अपने पत्र में लिखा है कि आयतुल्लाह सीस्तानी के इस महत्वपूर्ण फ़त्वे के बाद ही इराक़ी सेना और स्वयं सेवी बलों ने मिलकर दुनिया के सबसे ख़तरनाक आतंकवादियों के पराजित कर दिया। उन्होंने लिखा कि अगर स्वयंसेवी बल बड़ी ईमानदारी, बहादुरी और प्रतिबद्धता के साथ आयतुल्लाह सीस्तानी के नेतृत्व में आतंकवादियों के मुक़ाबिले में युद्ध में न आता तो इराक़ सरकार के लिये ऐसी जीत प्राप्त करना असंभव था।

मौलाना कल्बे जवाद ने आयतुल्लाह सै० अली सीस्तानी को बधाई देते हुए कहा कि दाइश जैसे आतंकवादी गुट से मूसिल की स्वतंत्रता पर आपको बधाई देता हूं। आपके फ़त्वे की शक्ति और महत्व को दुनिया ने बहुत करीब से देखा है। साथ ही मौलाना कल्बे जवाद ने अपने बधाई पत्र में इराक़ी सेना की बहादुरी और जनता की दृढ़ता की भी पशंसा की और आयतुल्लाह सीस्तानी की लंबी आयु और उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना तथा इराक़ में पूरी तरह अमन व शांति की कामना की है। ज्ञात रहे कि 2014 में तकफ़ीरी आतंकवादी गुट दाइश ने इराक़ के मूसिल शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया था जिसके बाद आयतुल्लाह सीस्तानी ने इराक़ की जनता विषेशकर जवानों को दाइश के ख़िलाफ़ लड़ने के लिये एकजुट होने का फ़त्वा दिया था।

जन्नतुल बक़ी के पुनः निर्माण के लिये नमाज़े जुमा के बाद आसिफ़ी मस्जिद में दस्तख़ती मुहिम चलाई गई

जन्नतुल बक़ी में मज़ाराते मुक़द्दसात की तामीरे नव के लिये मजलिसे उलमा-ए-हिंद की जानिब से मुल्क गीर दस्तख़ती मुहिम का आगाज़ 6 जुलाई को दरगाह हज़रत अब्बास लखनऊ से हुआ। तक़रीबन 5000 लोगों ने इस दस्तख़ती मुहिम में हिस्सा लेकर सऊदी हुकूमत के जुल्म के ख़िलाफ़ एहतिजाज किया।

दूसरे दिन 7 जुलाई को नमाज़े जुमा के बाद आसिफ़ी मस्जिद में दस्तख़ती मुहिम जारी हुई। इस मुहिम में आसिफ़ी मस्जिद के हज़ारों नमाज़ियों ने हिस्सा लिया। इमामे जुमा काइदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी की क़यादत में उलमा-ए-केराम और अवाम ने दस्तख़ती मुहिम में शरीक होकर अक़वामे मुत्तहिदा से सऊदी अरब में जन्नतुल बक़ी की तामीरे नव का मुतालिबा किया।